Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 5, Issue 3&4 - 2020, Pg. No. 4-5
Peer Reviewed Journal

Article

पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में स्काउट गाइड की भूमिका

राखी शर्मा

प्राचार्या, अरावली शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, तम्बाकुपुरा, सीकर, राजस्थान, भारत।
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202008

I N F O

E-mail Id:
motilalsharmasikar@gmail.com
Orcid Id:
https://orcid.org/0000-0002-4534-5761

Date of Submission: 2020-12-01
Date ofAcceptance: 2020-12-22

सारांश

बिना पर्यावरण के मनुश्य जीवन के बारे में सोचना कल्पना मात्र है। पृथ्वी पर व्याप्त पर्यावरण प्रकृति का सर्वोत्तम वरदान है। आदि काल से मानव को उसके पर्यावरण के साथ जोड़ा जाता रहा है। शिक्षा तथा पर्यावरण दोनों में ही विकास को महत्त्व दिया जाता है। पर्यावरण में वातावरण की गुणवत्ता तथा शिक्षा में व्यक्ति की गुणवत्ता को प्राथमिकता दी जाती है। शिक्षा द्वारा मनुश्य में पर्यावरण की गुणवत्ता के लिए परिवर्तन तथा सुधार लाया जाता है। मानव व पर्यावरण के मध्य परस्पर पूरकता का शाश्वत सम्बन्ध है, पर्यावरणीय शिक्षा मानव और पर्यावरण के बीच के सम्बन्धों की व्याख्या करती है जिससे लोग अपने आस–पास के पर्यावरण के महत्त्व को ठीक से समझ सके तथा अपने पर्यावरण को सुरक्षित व संरक्षित रखने हेतु प्रेरित हो सके। पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिए राजस्थान राज्य भारत स्काउट एवं गाइड के राज्य मुख्यालय द्वारा इको क्लब की स्थापना की गई है। सह शैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत स्काउटिंग/ गाइडिंग कार्यक्रमों का अहम् स्थान है। इनके माध्यम से छात्र–छात्राओं में श्रमनिश्ठा, कर्त्तव्यनिश्ठा, स्वावलम्बन व नैतृत्व की भावना को विकसित किया जाता ह। स्काउटिंग–गाइडिंग की इसी प्रवृति के अन्तर्गत सर्वांगीण विकास का प्रयास किया जाता है। स्काउट गाइड को पर्यावरण मित्र भी कहा गया है। यह पशु–पक्षियों का मित्र तथा प्रकृति प्रेमी होता है। प्रत्येक राष्ट्र की आवश्यकताएँ युग सापेक्ष होती है। आज के परिप्रेक्ष्य में देष को नैतिक सेवा, सौहार्द और रचनात्मक क्षेत्र में आगे बढ़ाने की आवश्यकता है और यह कार्य स्काउटिंग/ गाइडिंग के द्वारा सम्पन्न हो सकता है। इसके माध्यम से बच्चों को नैतिक दृश्टि में सुदृढ, कार्य के प्रति प्रतिबद्ध, रचनात्मकता के प्रति सन्नद्ध तथा पर्यावरण संरक्षण के प्रति समर्पित होकर कार्य करने हेतु आगे बढ़ाया जा सकता है।

अतः प्रकृति के जैविक व अजैविक घटकों मे संतुलन व संरक्षण बनाये रखना आज प्रत्येक व्यक्ति का कर्त्तव्य है। स्वस्थ एवं स्वच्छ पर्यावरण न केवल जीवन बल्कि उसके विकास के लिये भी अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य बिन्दुः पर्यावरण, स्काउट गाइड, प्रकृति, संरक्षण

प्रस्तावना

प्राचीन काल में भी पर्यावरण के विभिन्न घटकों को धर्म से जोड़कर इनके संरक्षण को महत्व दिया जाता था। हमारे प्राचीनतम वेद ऋग्वेद में पर्यावरण को धार्मिक निधि के रूप में महत्त्व दिया गया है। इसमें जीवधारियों एवं पौधों के संरक्षण का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। पारिस्थितिकी को एक पवित्र विज्ञान माना गया है। यजुर्वेद में अन्तरिक्ष, पृथ्वी, वनस्पतियों, औशधियों तथा समस्त ब्रह्माण्ड में शान्ति की प्रार्थना की गई है। ऋशियों ने वृक्ष की रक्षा को धर्म के साथ जोड़कर वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया तथा उनके द्वारा निर्देशित जीवन पद्धति इस प्रकार की थी कि व्यक्ति जीव–जन्तुओं, पशुओं, वृक्षों, लताओं को हानि पहुंचायें बिना प्रकृति पर निर्भर रह सके।

Copyright (c) 2020:Advanced Research Publications

आइंस्टीन ने कहा था – दो चीजे असीमित है ''एक ब्रह्माण्ड तथा दूसरी मानव की मूखर्ता'' मानव ने अपनी मूर्खता के कारण अनेक समस्याएं पैदा कर ली है। इस समय मानव के सामने प्रमुख रूप से चार समस्याएँ है –

- जनसंख्या वृद्धि
- अशिक्षा
- दरिद्रता
- प्रदूषण

ये चारों समस्याएँ एक दूसरे से इस प्रकार गुंथी हुयी है कि एक रस्सी का निर्माण हो गया है, यह रस्सी रूपी पाश मानव समाज को जकड़े हुए है। प्रकृति के साथ जो भूल मानव अनजाने में करता रहा है उसकी पुनरावृत्ति को रोकना होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्व–स्तर पर पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी।

पर्यावरण संरक्षण

वर्तमान में पर्यावरण को बचाने की जिम्मेदारी प्रत्येक राष्ट्र व समस्त मानव जाति की है। हमें निश्चित रूप से प्रकृति की और लौटना होगा। रूसों ने भी प्रकृति की ओर लौटने का आह्वान आज से 300 वर्ष पूर्व किया था।

स्काउट गाइड की भूमिका

सम्पूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव, समानता व पर्यावरण शिक्षा से ओत–प्रोत विश्वबंधुत्व की भावना के विकास को प्रारम्भ करने के लिए लार्ड बेडेन पावेल ने 1907 में स्काउटिंग का शुभारम्भ किया था। स्काउटिंग एक विश्वव्यापी नैतिक शिक्षा का आन्दोलन है, इसके तहत प्रकृति के समीप रहकर प्रकृति के महत्व को समझाया जाता है ताकि इसमें शामिल होने वाला प्रत्येक सदस्य पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझ सके तथा इसे भली–भांति निभा सके। इसमें समाज के बालक, बालिकाओं का सर्वांगीण विकास जो नियम, तीन प्रतिज्ञा तथा तीन आदर्श वाक्यों पर आधारित है। इसमें बालकों को मनोवैज्ञानिक रूप से ''लर्निंग बाई ड्यूईंग'' द्वारा नैतिक शिक्षा दी जाती है। जो घर, समाज एवं देश की पूरक शिक्षा है।

सह शैक्षिक गतिविधियों के अन्तर्गत स्काउटिंग गाइडिंग कार्यक्रमों का अहम् स्थान है। स्काउटिंग गाइडिंग शिक्षा को व्यवहारिक धरातल पर उतारने की प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया के माध्यम से शिक्षा मौखिक व जुबानी न होकर व्यक्तिगत रूप से निखार प्रदान करने वाली है। ज्ञान, भावना व कर्म तीनों का इसमें समन्वय है। स्काउटिंग व गाइडिंग शिक्षा का प्रायोगिक पक्ष है।

स्काउटिंग–गाइडिंग आन्दोलन एक अन्तर्राष्ट्रीय आन्दोलन है। विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विशमता और भिन्नता होते हुए भी इस संस्था के सदस्यों में समान उद्देश्य और सैद्धांतिक एकरूपता है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस प्रवृति का विस्तार होने के बावजूद यह संस्था अपने विश्वव्यापी कार्यक्रमों और समाज सेवा के पवित्र सिद्धान्तों के प्रति समर्पित है और इतने लम्बे समय का अन्तराल भी इसे अपने सिद्धांतों से विचलित नहीं कर पाया। कितनी ही प्रगतिशील संस्थाएँ, समसामायिक परिवर्तन के साथ कदम मिलाकर नहीं चल पाई और काल दोष के कारण वे या तो अतीत के गर्भ में डूब कर गुम हो गई या उसकी कोई उपलब्धि नहीं रही परन्तु स्काउट–गाइड की उपलब्धि का ग्राफ विष्व स्तर पर बढ़ता ही जा रहा है। स्काउटिंग बालक में चरित्र निर्माण एवं नैतृत्व विकास का महान प्रशिक्षण है। इससे सदस्यों में प्रकृति एवं पर्यावरण के प्रति सम्मान, देश एवं समाज के प्रति निःस्वार्थ सेवाभावना जाग्रत होती है। आजकल पर्यावरणीय शिक्षा के अभाव में बालक–बालिकाओं को अनुशासनहीनता से बचाने के लिए स्काउटिंग एक सफल प्रयास है क्योंकि यह बालकों को फूड, फन एण्ड फाइट प्रदान करती है जो कि आज के बालक की चाहत है। इसका पाठ्यक्रम बालक को मनोवैज्ञानिक रूप से तैयार करता है तथा प्रकृति के प्रति प्रेम एवं पर्यावरण संरक्षण की भावना पैदा करता है।

पर्यावरण संरक्षण के लिए सूझाव

- पर्यावरण संरक्षण कानून को सख्ती से लागू किया जावे
- जल संरक्षण, मृदा संरक्षण, खनिज संरक्षण, वन्य प्राणी संरक्षण एवं वन संरक्षण आदि के लिए कानून बनाए जाएं।
- जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को कैसे कम किया जावे? यह एक वर्तमानकालिक पर्यावरण की ज्वलंत समस्या है। जिसके समाधान हेतु उपाय किए जाएं।

निष्कर्ष

स्वस्थ विकास तो मनुष्य के साथ–साथ जमीन, जल, जंगल और जानवर के विकास से भी जुड़ा है। इनकी उपेक्षा करके विकास की बात करना एक कोरे कागज की भांति एक कल्पना मात्र होगी। पर्यावरण की जिस समस्या से हम जूझ रहें हैं वह और विकराल रूप धारण कर लेगी। अतः जरूरत इस बात की है कि विकास पारिस्थितिकी तन्त्र को ध्यान में रखकर किया जाए, न कि अकेले मानव मात्र को ध्यान में रखकर। पारिस्थितिकी तन्त्र में हर किसी की अपनी एक अलग और विशेष भूमिका है। अगर इस चक्र के किसी भी अंग को नुकसान हुआ तो पूरे चक्र का गड़बड़ाना तय है। यदि विकास की कोशिष केवल मानव मात्र को ध्यान में रखकर की जाएगी तो यह सहज और स्वाभाविक है कि प्रकृति में जबर्दस्त असंतुलन कायम होगा और उसके दुष्परिणामों से मनुष्य बच नहीं पाएगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूचि

1. वेबसाइट: w.paryavaranmitra.in
2. बेडेन पावलः स्काउटिंग फॉर बॉयज।
3. अरूंधती राय। द ग्रेटर कॉमन फ्यूचर। द फ्रन्ट लाईन।
4. पी. एस. योगी। पारिस्थिकीय विकास एवं पर्यावरण भूगोल।
5. जे0 बी0 लाल।'इण्डिया'स फोरेस्ट्स मीथ एण्ड रियलिटी।
6. डॉ0 वी0 के0 श्रीवास्तव एवं डॉ वी0 पी0 राव पर्यावरण एवं परिस्थितिकी।

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.202008